शिक्षित करो ! संगठित करो !! संघर्ष करो !!!

राष्ट्रपिता जोतिबा फुले

बामसेफ

दि ऑल इंडिया बैकवर्ड (एस.सी., एस.टी., ओ.बी.सी.) एण्ड
माइनॉरिटी कम्युनिटीज् एम्प्लाइज फेडरेशन, नई दिल्ली
527–ए, नेहरू कुटिया, कबीर बस्ती, मल्कागंज, दिल्ली – 110 007
दूरभाष : +91 93183 63969 www.bamcef.org.in

बाबा साहेब डा. अम्बेडकर

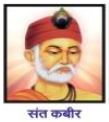

संत कबीर

संत रविदास

मां जिजाऊ

छ. शिवाजी महाराज

सावित्रीबाई फुले

Regd. No.S-17809

शाहूजी महाराज

बिरसा मुंडा

संत गाडगेबाबा

पेरियार रामासामी

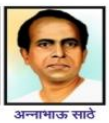

अन्नाभाऊ साठे

42 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन–2025

दिनांक : 6 से 9 दिसंबर (शनिवार से मंगलवार) 2025
स्थान : दाना मंडी फिल्लौर, नजदीक फिल्लौर या लुधियाना रेलवे स्टेशन (पंजाब)

मेरी शान!
भारत का संविधान!!

उद्घाटन सत्र

डोर टु डोर - बीएस-4

दिनांक : 6 दिसंबर, 2025 (शनिवार) समय : सुबह 11 : 00 बजे से दोपहर 2 : 00 बजे तक

उद्घाटक : न्यायाधीश रत्नाकर भेंगरा (सेवानिवृत्त), झारखण्ड उच्च न्यायालय, रांची
विशेष अतिथि : मू. देवराज सुमन (अध्यक्ष, डॉ. अम्बेडकर मेमोरियल कमिटी ग्रेट ब्रिटेन, इंग्लैंड)
मू. डॉ. के. एस. चौहान (वरिष्ठ अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली)

अध्यक्षता : मू. इंजी. आर. एल. ध्रुव (राष्ट्रीय अध्यक्ष, बामसेफ)

आमंत्रण

प्रिय मूलनिवासी बहुजन साथियों,

बामसेफ का 42 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन फिल्लौर (जालंधर), पंजाब में आयोजित है। यह एक कैडर-आधारित अधिवेशन होगा। हमें आशा है कि आप इस कार्यक्रम सूची की विषय-वस्तु, विशेष रूप से निर्धारित विचार-विमर्श के विषयों का गंभीरता से अध्ययन करेंगे। हम आशा करते हैं कि आप इस अधिवेशन में अवश्य शामिल होंगे और हमारे समाज के ज्वलंत मुद्दों और सरोकार पर आयोजित ज्ञानवर्धक विचार-विमर्श का लाभ उठाएंगे।

इस अवसर पर हम अपने सभी कार्यकर्ताओं और उन सभी को हार्दिक निमंत्रण देते हैं जो निर्धारित मानदंडों को पूरा करके हमारे कार्यकर्ता बनना चाहते हैं और इस सम्मेलन में भाग लेना चाहते हैं। हम आपसे विनम्र निवेदन करते हैं कि आप इस आयोजन को सफल बनाने के लिए अपना समय, प्रतिभा और धन उदारतापूर्वक प्रदान करें और फुले-अम्बेडकरी मिशन को सफल बनाने में अग्रणी भूमिका निभाएं।

मिशन में आपका साथी,
(आर. एस. इंजि. राम)
राष्ट्रीय महासचिव, बामसेफ
नई दिल्ली

जय भीम ! जय मूलनिवासी !! जय भारत !!! जय संविधान !!!!

दोपहर का भोजन : दोपहर 2.00 बजे से 3.00 बजे तक

कार्यक्रम

विशेष प्रबोधन सत्र-1

दिनांक: 6 दिसंबर, 2025 (शनिवार) समय: दोपहर 3.00 बजे से शाम 5.30 बजे तक

विषय : मूलनिवासी सभ्यता- "कीलाडी" और "इंडस" के सीधे संबंध का ताजा उद्घोष: भयभीत ब्राह्मणवाद की बोलती बंद

"कीलाडी" सभ्यता के अवशेष दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य के शिवगंगा जिले में वैगई नदी के तट पर प्राप्त हुए हैं। यह स्थल मदुरै शहर से 12 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में स्थित है। इसकी खुदाई 2015 में शुरू की गयी थी। अब तक इस में 18000 से अधिक पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। यह सब इसकी समृद्धि और उन्नति को दर्शाते हैं। अवशेषों पर तमिल ब्राह्मी लिपी (580 ईसा पूर्व) उत्कीर्ण है। इसमें संस्कृत का नामों निशान तक नहीं है। अर्थात इसका संबंध वैदिक सभ्यता से बिल्कुल नहीं है। "कीलाडी" के मृदभांड पर उत्कीर्ण ग्रैफिटी चिन्ह और शहर में जल निकास प्रणाली का सीधा संबंध "इंडस घाटी" सभ्यता से जुड़ा हैं। इस सभ्यता के कालखंड और अन्य साक्ष्यों से सिद्ध हुआ है कि भारत में आर्यों की घुसपैठ का कालखंड अशोक के बाद का है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के केन्द्रीय निदेशक डॉ. अमरनाथ रामकृष्ण ने जनवरी 2023 में कीलाडी उत्खनन पर करीबन 1000 पन्नों की रिपोर्ट प्रस्तुत की और सिद्ध किया कि यह संगम कालीन सभ्यता है। ब्राह्मणवादी इन तथ्यों से दुखी हुए। वह चाहते हैं कि इसे वैदिक सभ्यता से जोड़ा जाये। लेकिन ऐसा संभव नहीं हुआ। इसलिए उन्होंने डॉ. अमरनाथ रामकृष्ण को दिनांक 19 जून 2025 को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ए.एस.आई.) मुख्यालय से "स्थानांतरित" कर दिया। इस दरम्यान तमिलनाडु सरकार ने इसका पुरजोर विरोध किया और उत्खनन का कार्य अपने हाथों में ले लिया है। परिणामत: ब्राह्मणवाद के कदमों के नीचे की जमीन खिसक रही है और इस विषय पर उसकी बोलती बंद हो गयी है। ऐसे में यह विषय जनमानस तक ले जाने हेतु यहाँ चर्चा के लिए रखा गया है।

संचालन	:	मू. कमलेश्वर मांझी (केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य, बामसेफ)
प्रस्ताविक कथन	:	मू. कविता मडावी (केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य, बामसेफ)
अतिथि वक्तागण	:	मू. एड. पंकज कुमार रवि (राष्ट्रीय अध्यक्ष, मूलनिवासी संघ, नई दिल्ली)
		मू. डॉ. गंगेश शाह गोंडवाना (सहायक कुलसचिव, आई.आई.टी बीएचयू, उत्तर प्रदेश)
		मू. डॉ. सुखप्रीत ऊदोके (प्रसिद्ध सामाजिक चिंतक, पंजाब)
		मू. प्रो. डॉ. एस. के. चहल (इतिहास विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा)

अध्यक्षता : मू. डॉ. निलीमा बागड़े (केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य, बामसेफ)

जल एवं चाय अवकाश: शाम 5:30 से 6:00 बजे तक

प्रतिनिधि सत्र- 1 : भाग -1 (समूह चर्चा : सहभाग- अधिवेशन में सहभागी सारे प्रतिनिधि)

दिनांक: 6 दिसंबर, 2025 (शनिवार) समय: शाम 6 : 00 बजे से रात 9 : 00 बजे तक

विषय : OIS विचार-मंथन: संगठन का विस्तार और बाधाओं का निवारण

फुले–अम्बेडकरी आंदोलन की समग्र सुधारात्मक रणनीतियां (OIS) नामक दस्तावेज बामसेफ ने दिनांक 6 जून 2021 को अपने कर्मठ कार्यकर्ताओं के लिए जारी किया। जिस में अष्टांगिक रणनीतियां शामिल हैं। उसमें – 1. संगठन का संचालन 2. प्रचार–प्रसार 3. सतत् विकास (रखरखाव एवं निरन्तरता) 4. स्कन्ध सृजन 5. शत्रु संधान 6. सौहार्दपूर्ण संबंध 7. गैर–राजनैतिकता एवं 8. अन्य रणनीतियां शामिल है। उसे धरातल पर लागू करने के लिए निरंतर पठन और चिंतन–मनन करना आवश्यक है। इसलिए इसके अमल का राष्ट्रीय स्तर पर सिंहावलोकन करने का निर्णय केन्द्रीय कार्यकारिणी ने लिया है।

सिंहावलोकन के माध्यम से OIS के विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन किया जाएगा। क्योंकि यह मामला रणनीति का है इसलिए इसे कार्यकर्ताओं के प्रतिनिधि सत्र में समूह चर्चा के लिए रखा गया है। उसका सांकेतिक सार मंच से सबके साथ साझा किया जाएगा। इसका दुरदर्शनात्मक (आनलाईन) प्रसारण नहीं होगा। परंतु लिखित (संपादित) वृतांत मूलनिवासी टाइम्स के विशेषांक में प्रकाशित किया जाएगा। उसमें भी केवल बाह्य पहलूओं की चर्चा होगी। परंतु अंतर्गत सूक्ष्म बिन्दुओं पर मात्र सांकेतिक सार उपलब्ध होगा। इस चर्चा में बामसेफ और एवं स्कन्ध संगठनों के कर्मठ कार्यकर्ता सहभागी होंगे और संगठन के विकास और विस्तार का आगामी कार्यक्रम निर्धारित करेंगे। इस चर्चा से व्यक्तिगत लक्ष्य सुनिश्चित होंगे और समय सीमा का निर्धारण भी होगा। उसके नीतिगत पहलू उद्घोषित होंगे ताकि समाज का सहभाग और सहयोग प्राप्त हो सके। परंतु अमल की विधा, संहिता और तर्कज्ञान समूह चर्चा की प्रक्रिया तक ही सीमित होगा। उसकी शब्दावली, भाषा और परिभाषा कार्यकर्ताओं में उत्साह, धैर्य, शौर्य, त्याग एवं समर्पण की भावना और सदगुण निर्माण करने वाली होगी। इस प्रक्रिया से कार्यकर्ताओं में समृद्ध लोकतांत्रिक चरित्र का निर्माण होगा। हमारे आंदोलन के लिए वह एक प्रभावी साधन बनेगा। इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर इस विषय की निर्मित की गयी है।

संचालन	:	मू. प्रदीप बनसोडे (राष्ट्रीय सचिव, बामसेफ रिसर्च विंग)
प्रस्ताविक कथन	:	मू. अनिल उज्जैनवाल (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, बामसेफ)
सहभाग	:	विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधिगण

अध्यक्षता : मू. एन. गंगाधर (केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य, बामसेफ़)

रात्रि भोजन : 9 : 00 बजे से 10 : 00 बजे तक

दिनांक : 7 दिसंबर, 2025 (रविवार) नाश्ता : सुबह 8 : 00 बजे से 9 : 00 बजे तक

दिनांक: 7 दिसंबर, 2025 (रविवार) समय: सुबह 9:00 बजे से 11:30 बजे तक

प्रतिनिधि सत्र-1 : भाग –2 (चयनित प्रतिनिधियों द्वारा समूह चर्चा की प्रस्तुतियाँ)

विषय : OIS विचार-मंथन: संगठन का विस्तार, बाधाओं का निवारण

संचालन : मू. प्रदीप बनसोडे (राष्ट्रीय सचिव, बामसेफ रिसर्च विंग)
प्रस्ताविक कथन : मू. अनिल उज्जैनवाल (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, बामसेफ)
प्रस्तुतिकर्ता : विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधिगण

अध्यक्षता : मू. एन. गंगाधर (केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य, बामसेफ)

विशेष प्रबोधन सत्र-2

दिनांक : 7 दिसंबर, 2025 (रविवार) समय : सुबह 11 : 30 बजे से दोपहर 2 : 00 बजे तक

विषय : हे मूलनिवासी बहुजनो! ब्राह्मणवादी गुटों में मत जाओ !! अपना लोकतांत्रिक विकल्प स्वयं बनाओ !!!" - पंजाब से बाबासाहेब का मार्गदर्शन

दिनांक 27 से 29 अक्टूबर 1951 तक बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर चुनाव प्रचार के लिए पंजाब गए थे। उन्होंने जालंधर, लुधियाना और पटियाला का दौरा किया और 4 महत्वपूर्ण भाषण दिए। इन्हें BAWAS खंड 17 भाग 3 (क्रम संख्या 124–127) में प्रलेखित किया गया है। अपने पहले संदेश में उन्होंने पिछड़े वर्ग के लिए ऐसे स्वतंत्र राजनीतिक संगठन के महत्व पर जोर दिया, जिसका कभी भी विरोधी ताकतों के कॉंग्रेस सहित अन्य राजनीतिक दलों में विलय नहीं होना चाहिए। जालंधर में डीएवी कॉलेज की छात्र संसद के समक्ष भाषण में उन्होंने संसदीय लोकतंत्र में (i) सशक्त विपक्ष और (ii) स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया पर बल दिया। जो आज की ई.वी.एम. की परिस्थिति में अत्यंत प्रासंगिक है।

लुधियाना के संदेश में उन्होंने कहा कि, "आर्य–ब्राह्मण बाहर से भारत आए और उन्होनें मूलनिवासी बहुजनों पर वर्ण व्यवस्था थोपी"। उन्होंने आगे कहा कि, "पिछड़े वर्गों के अधिकारों को छीनने के लिए ब्राह्मण–बनियों ने अपने ट्रुओं के ज़रिए कई पार्टियाँ बनाई हैं"। वही उन्होंने आगाह किया कि, "अगर हमारे सच्चे प्रतिनिधि नहीं चुने गए तो हम आज़ादी का आनंद नहीं ले पाएँगे। आज़ादी हमारे लोगों के लिए एक मज़ाक होगी"। इसलिए, उन्होंने आगे कहा, अगर आप कांग्रेस को वोट देंगे तो आपको हमेशा के लिए कष्ट सहना पड़ेगा ... कांग्रेसी उन लोगों के मुँह पर थूकेंगे भी नहीं जो आज कांग्रेस का टिकट माँग रहे हैं। कई पार्टियाँ आपके पास आएंगी और वोट माँगेंगी, लेकिन उनके बहकावे में न आएँ ... अपने सच्चे प्रतिनिधि चुनें। पटियाला में उन्होंने इसी तर्ज पर बात की और कहा कि, ब्राह्मण और बनिया कभी आज़ादी के लिए नहीं मरे, हालाँकि वे ही आज इसका लाभ उठा रहे हैं।

उक्त पंक्तियाँ एक स्थायी दिशानिर्देश हैं, जब कि हमारे लोग किसी न किसी "ब्राह्मण–बनिया" पार्टी के लिए अपनी ताकत समर्पित करने के लिए तैयार बैठे हैं। इसलिए उपरोक्त विषय यहाँ विचार मंथन के लिए रखा गया है।

संचालन : मू. आलोक कुमार (केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य, बामसेफ)
प्रस्ताविक कथन : मू. शत्रुजीत सिंह (राष्ट्रीय संगठन सचिव, बामसेफ)
अतिथि वक्तागण : मू. कृष्ण कुमार जानू (प्रदेश महासचिव, जाट महासभा राजस्थान)
मू. अधि. अशोक बसोत्रा (अधिवक्ता उच्च न्यायालय, जम्मू एण्ड कश्मीर)
मू. प्रो. निर्मला चौधरी (पूर्व विभागाध्यक्ष, प्रबंधन अभ्यास, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)
मू. प्रो. रमाकांत ठाकुर (हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद, उ.प्र.)

अध्यक्षता : मू. डॉ. संजय इंगोले (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, बामसेफ)

दोपहर का भोजन अवकाश : दोपहर 2:00 बजे से 3:00 बजे तक

विशेष प्रबोधन सत्र -3

दिनांक: 7 दिसंबर, 2025 (रविवार) समय: दोपहर 3.00 बजे से शाम 5.30 बजे तक

विषय : पंजाब में सामाजिक क्रांति का कारवां: पुरखों की विरासत और वर्तमान की पूंजी पर गहन चिंतन

भारत में सामाजिक क्रांति के आंदोलन में पंजाब का अनन्य साधारण महत्व रहा है। गुरु नानक देव (1469–1539) के सिख धर्म से लेकर बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर (1891–1956) और उनके समकालीन–सहयोगी बाबू मंगुराम मुगोवालिया (1886–1980) और चुन्नी लाल थापर के आदि धर्म आंदोलन के समय काल से क्रांतिकारी सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन इतिहास में अद्वितीय हैं।

बाबासाहेब के बाद के परिवर्तनवादी साहित्य और सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन के लिए समर्पित बामसेफ और बहुजन आंदोलन में भी पंजाब ने एक अग्रणी भूमिका निभाई। उसके प्रभाव से पंजाब के मूलनिवासी–बहुजन समाज में सामाजिक ऋण वापसी की भावना और आंदोलन के लिए त्याग समर्पण की परंपरा और सामर्थ्य बहुत भारी मात्रा में उपलब्ध हैं। परंतु जितने

अनुपात में इसका उपयोग होना चाहिए वह होते हुए दिखाई नहीं पड़ता। अत: हमारे लिए यह एक बड़ी चिंता का विषय है कि यहाँ सामाजिक क्रांति के लिए न्यौछावर होने को तैयार ऊर्जा स्थिर पड़ी हैं और इसे पहचानना, सही दिशा देना और मार्गदर्शन करना महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इस अनुभूति से उपरोक्त विषय को यहाँ चर्चा के लिए रखा गया हैं।

संचालन : मू. करमवीर टंडन (केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य, बामसेफ)
प्रस्ताविक कथन : मू. नितिन थाबलके (केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य, बामसेफ)
अतिथि वक्ता : मू. जसकरन सिंह (बटालियन कमांडेंट, पंजाब)
मू. तरसेम लाल चाहल (प्रसिद्ध फुले-अम्बेडकरवादी, लंदन, यू. के.)
मू. डॉ. ज्योति कल्याणी (सामाजिक चिंतक, अमृतसर)
मू. डॉ. अमृत कौर (सामाजिक चिंतक, जालंधर)

अध्यक्षता : मू. इंजी. आर. एस. राम (राष्ट्रीय महासचिव, बामसेफ)

जल एवं चाय अवकाश: शाम 5:30 से 6:00 बजे तक

प्रतिनिधि सत्र-2 : भाग -1 (समूह चर्चा : सहभाग- अधिवेशन में सहभागी सारे प्रतिनिधि)

दिनांक: 7 दिसंबर, 2025 (रविवार) समय: शाम 6 : 00 बजे से रात 9 : 00 बजे तक

विषय : PSA का खाका : राष्ट्रीयकरण का एजेंडा और कार्यकर्ताओं की भूमिका

'पी .एस .ए .' अर्थात पीपल्स सोशल एक्शन। यह बीएस 4 अभियान का महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। बीएस-4 अभियान का लक्ष्य 'संविधान-सम्मान-सुरक्षा-संवर्धन' है। इसे सुनिश्चित करने के लिए संगठन ने बीएस-4 अभियान का जनसम्पर्क गाँव-गाँव, बस्ती-बस्ती और शहर-शहर तक पहुचाने का संकल्प लिया है। इस प्रक्रिया में जन-मानस को जिस विषय पर एकमत करना है, इसका प्रमुख विषय है- "सम्पूर्ण राष्ट्रीयकरण"। संविधान की मूल भावना को ध्यान में रखकर यह विषय संगठन ने एक लंबी और गहरी रणनीति के अंतर्गत मूलनिवासी-बहुजन समाज को शासक वर्ग बनाने के लिए निर्धारित किया है।

इसे कार्यान्वित करने की बृहद योजना कर्मठ कार्यकर्ताओं के साथ समूह चर्चा करके बनाई जानी है। इस संदर्भ में "सघन कार्यक्षेत्र निर्माण" की योजना इसका अहम हिस्सा है। जिसके माध्यम से पी .एस .ए . की हर इकाई में सदस्य संख्या और निधि संग्रह के लक्ष्य निर्धारित होने है। जिससे संविधान और लोकतंत्र की सुरक्षा और संवर्धन हेतु सामाजिक "जन-कार्यवाही" का एक ठोस खाका तैयार होगा। उसके आधार पर भारत देश से ब्राह्मणवाद को जड़-मूल से उखाड़ फेका जाएगा और "सम्पूर्ण राष्ट्रीयकरण" का एजेंडा पूर्णरूपेण लागू किया जाएगा। अर्थात संविधान में अंतर्निहित "राज्य-समाजवाद" वास्तव में फलित होगा।

उपरोक्त परिकल्पना में "सम्पूर्ण राष्ट्रीयकरण" का विचार सबसे प्रबल विचार है। वह एक नव-आशावाद है। परंतु इसको मूर्तरूप प्रदान करने के लिए कार्यकर्ताओं को एकाग्र होकर अपनी सम्पूर्ण तर्क-शक्ति, शारीरिक बल और समस्त संसाधनों को दाव पर लगाना होगा। तभी यह जन-जन का विषय बन सकता है। अत : कार्यकर्ता स्वयं प्रेरणा से इस कार्य योजना में सहभागी हो और अधिक से अधिक जिम्मेदारी का बीड़ा उठायें इस उद्देश्य से यह विषय यहाँ समूह चर्चा के लिए रखा गया है।

संचालन : मू. मनोज कुमार (राष्ट्रीय संगठन सचिव, बामसेफ)
प्रस्ताविक कथन : मू. इंजी. एन. श्रीधर (राष्ट्रीय संगठन सचिव, बामसेफ)
सहभाग : विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधिगण

अध्यक्षता : मू. संजय मोहिते (राष्ट्रीय संगठन सचिव, बामसेफ)

रात्रि भोजन : रात 9 : 00 बजे से रात 10 : 00 बजे तक

दिनांक: 8 दिसंबर (सोमवार), 2025 नाश्ता: सुबह 8:00 बजे से सुबह 9:00 बजे तक

प्रतिनिधि सत्र-2: भाग -2 (चयनित प्रतिनिधियों द्वारा समूह चर्चा की प्रस्तुतियाँ)

दिनांक: 8 दिसंबर, 2025 (सोमवार) समय : सुबह 9 : 00 बजे से 11 : 30 बजे तक

विषय : PSA का खाका : राष्ट्रीयकरण का एजेंडा और कार्यकर्ताओं की भूमिका

संचालन : मू. मनोज कुमार (राष्ट्रीय संगठन सचिव, बामसेफ)
प्रस्ताविक कथन : मू. इंजी. एन. श्रीधर (राष्ट्रीय संगठन सचिव, बामसेफ)
प्रस्तुतिकर्ता : विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधिगण

अध्यक्षता : मू. संजय मोहिते (राष्ट्रीय संगठन सचिव, बामसेफ)

विशेष प्रबोधन सत्र-4

दिनांक: 8 दिसंबर, 2024 (सोमवार) समय: सुबह 11:30 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक

विषय : कैसे हो फुले अम्बेडकरी संगठनों का संगम? अर्थात मूलनिवासी बहुजन की विचारधारा और लोकतांत्रिक चरित्र का आग्रह ही फुले-अम्बेडकरी एकता का सूत्र है !

भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही जाति-व्यवस्था और असमानताओं के विरुद्ध संघर्ष की दो महत्वपूर्ण धाराएँ रही है- राष्ट्रपिता ज्योतिराव फुले की सत्यशोधक परंपरा और बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर की संवैधानिक परंपरा। दोनों ही धाराएँ मूलनिवासी-बहुजन समाज के लिए न्याय का स्त्रोत है। इन दोनों धाराओं का संगम मात्र ऐतिहासिक नहीं, बल्कि आज के लोकतांत्रिक भारत में मूलनिवासी-बहुजन की एकता और प्रगतिशीलता का जीवंत प्रतीक है। फुले-अम्बेडकरी संगठनों के संगम का अर्थ है- मूलनिवासी बहुजन की विचारधारा और लोकतांत्रिक चरित्र का मेल मिलाप। यह संगम न केवल भावनात्मक या प्रतीकात्मक है, बल्कि इसका व्यावहारिक स्वरूप एकता और अपनत्व के मूल्यों पर आधारित है। लोकतांत्रिक चरित्र का आग्रह इस संगम को और मजबूत बनाता है। क्योंकि यह संगम मात्र राजनीतिक सत्ता की चाहत नहीं, बल्कि मूलनिवासी बहुजन समाज की एकता की चेतना है और कभी भी समाप्त न होने वाली सामाजिक पूंजी हैं। परंतु इसको प्राप्त करने की शर्त है कि, इसके उद्देश्य, सिद्धांत, मूल्य, प्रतीक, पहचान और विचारधारा से कोई खिलवाड़ न करें, समझौता न करें, बेईमानी न करें। जो संगठन, समूह और संस्था इस प्रकार से एकता के सूत्र में बंधना चाहते हैं वे एक दूसरों से संवाद करें, तालमेल करें और समाज के कारवां को आगे बढ़ाएं। यही समाज के सामान्य जन की पुकार है। इस भावना का सम्मान करते हुए "बामसेफ़ ने नेशनल कोऑर्डिनैशन-कोऑपरेशन ऑफ मूलनिवासी बहुजन ऑर्गनाइजेशनस (NCCMBO)" अर्थात मूलनिवासी बहुजन संगठनों का राष्ट्रीय समन्वय और सहयोग संघ का निर्माण किया है। उसके कार्य को आगे बढ़ाने हेतु यह विषय यहाँ चर्चा के लिए रखा गया है।

संचालन : **मू. इंजी. ए. के. दिवाकर** (केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य, बामसेफ)
प्रस्ताविक कथन : **मू. पुष्पराज दहीवले** (राष्ट्रीय अध्यक्ष, मक्कम)
अतिथि वक्ता : **मू. नितिन सावंत** (मानव मुक्ति मिशन, महाराष्ट्र)
मू. अरुण कुमार गुप्ता (प्रदेश अध्यक्ष, अर्जक संघ, बिहार)
मू. जावेद पाशा कुरैशी (अध्यक्ष, भारतीय मुस्लिम परिषद)
मू. प्रो. डॉ. मुनेश कुमार (राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, मक्कम)

अध्यक्षता: मू. सुनीता कपरवाल (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, बामसेफ)

दोपहर का भोजन अवकाश: दोपहर 2:00 बजे से 3:00 बजे तक

जागृति सत्र-5

दिनांक : 8 दिसंबर (सोमवार), 2025 समय : दोपहर 3.00 बजे से शाम 5.30 बजे तक

विषय : ऐतिहासिक किसान आंदोलन की उपलब्धियां और भविष्य की चुनौतियां

केंद्र सरकार द्वारा अधिनियमित विवादास्पद तीन "किसान कानून" के विरुद्ध में भारतीय किसानों ने 2020 में एक लंबा आंदोलन किया। जिसमें देश भर के किसान भारी मात्रा में सहभागी थे। उसे रोकने के लिए सरकार ने आंदोलनकारियों पर सशस्त्र हमला किया। इस आंदोलन में 600-700 किसान शहीद हुए। उससे देश में जन आक्रोश फैला। परिणामत : 19 नवंबर 2021 को संसद ने उन्हें रद्द कर दिया और किसानों से वार्तालाप करने हेतु एक समिति का गठन किया। समिति ने उन्हें सरकार की ओर कई वादें किए और आंदोलन समाप्त करने को कहा। किसानों ने आंदोलन समाप्त कर दिया। उसके बाद किसानों को कृषि उपज के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) प्रदान करने की मांग पर चार दौर की बैठकें हुई। परंतु सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) के लिए अभी भी तैयार नहीं है।

उपरोक्त ऐतिहासिक घटनाक्रम का महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उक्त ऐतिहासिक किसान आंदोलन से पूंजीपतियों को किसानों पर अन्याय करने की अनुमति देने वाले "काले कृषि कानून" सरकार को वापस लेने पड़े। परंतु जिन समस्याओं को सुलझाने के लिए यह आंदोलन खड़ा हुआ था वह समस्याएं अभी भी जिंदा हैं। किसानों को पुराने कानून के तहत न्यूनतम समर्थन मूल्य उपलब्ध नहीं था और वह अभी भी नहीं है। इसलिए एक सही "किसान हित संरक्षण कानून" की आवश्यकता आज भी है। परंतु उस शक्तिशाली किसान आंदोलन को एक षडयंत्र के तहत सरकार ने कुटिलता से समाप्त कर दिया। अब प्रश्न यह है कि उस शक्तिशाली आंदोलन को पुन : खड़ा कैसे किया जाए? और वर्तमान तथा भविष्य की चुनौतियों का सफल सामना कैसे किया जाए? इन प्रश्नों का समाधान खोजने हेतु और किसान आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए यह विषय यहाँ चर्चा के लिए प्रस्तुत है।

संचालन : **मू. प्रेमपाल गौतम** (राष्ट्रीय कार्यालय सचिव, बामसेफ)
प्रस्ताविक कथन : **मू. एम. डी. चंदनशिवे** (प्रशिक्षण निदेशक, CEC, बामसेफ)
अतिथि वक्ता : **मू. सरदार बलबीर सिंह राजेवाल** (किसान नेता, पंजाब)
मू. प्रो. डॉ. सुभाष सैनी (हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)
मू. शिफत खान (नेता, मेवाती किसान मोर्चा)
मू. प्रा. डॉ. विनोद आर्य (पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा)
मू. सुरेश कोथ (भारतीय किसान-मजदूर यूनियन, हरियाणा)

अध्यक्षता : मू. सुरेश द्रविड (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, बामसेफ)

जल एवं चाय अवकाश: शाम 5:30 से 6:00 बजे तक

विशेष प्रबोधन सत्र –6

दिनांक: 8 दिसंबर (सोमवार), 2025 समय: शाम 6:00 बजे से रात 9:00 बजे तक

विषय: कलाचारिक जागृति जलसा: ज्ञान-विज्ञान और मुलनिवासी पहचान

जन आंदोलन के लिए लोक कलाकार की भूमिकाएँ बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। जन सामान्य की बोली–भाषा, कथा–कहानी, अभिनय, गीत–संगीत, चित्र–चलचित्र इत्यादि माध्यम अत्यंत शक्तिशाली होते हैं। जन प्रबोधन में उनका उपयोग किए बगैर समाज की सोच और विचार में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना संभव नहीं होता। इस तथ्य को स्वीकार करते हुए और पंजाब के कलाचारिक धरोहर को अधिवेशन में सम्मिलित करने हेतु यह कलाचारिक जागृति जलसे का विशेष सत्र आयोजित किया गया है। इसमें पंजाब के साथ–साथ सम्पूर्ण भारत से सहभागी कलाकारों को अपनी प्रबोधनकारी कला का प्रदर्शन करने का अवसर दिया जाएगा। इसका नियोजन एवं संचालन बामसेफ के प्रचार माध्यम के प्रभारी और मूलनिवासी सभ्यता संघ के पदाधिकारी करेंगे और एक उत्कृष्ट कला प्रदर्शन की व्यवस्था करेंगे। यह सत्र कलाचारिक जागृति के लिए ही समर्पित हैं। परंतु इसमें उपरोक्त विषय में वर्णित "ज्ञान–विज्ञान और मुलनिवासी पहचान" इन विचार बिंदुओं की सीमा में रहकर ही प्रस्तुतियों को अवसर दिया जाएगा।

संचालन	: मू. सुनील कुमार (राष्ट्रीय अध्यक्ष, मूलनिवासी सभ्यता संघ)
प्रस्ताविक कथन	: मू. डॉ. हरेराम सिंह कुशवाहा (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, बामसेफ)
सहभागिता	: प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय मूलनिवासी कलाकार

अध्यक्षता: मू. इंजी. सीताराम (राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी, बामसेफ)

दिनांक: 9 दिसंबर (मंगलवार), 2025: नाश्ता: सुबह 8:00 बजे से 9:00 बजे तक

विशेष प्रबोधन सत्र - 7

दिनांक: 9 दिसंबर (मंगलवार), 2025 समय: सुबह 10:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक

विषय : ब्राह्मणवादी पार्टियों के चक्कर में गुम न हो जाए
ओबीसी जनगणना और बजट – जमीनी हकीकत का इशारा

बामसेफ के माध्यम से "ओबीसी जनगणना और उनके लिए विशेष विकास कोष" का विषय पुरजोर तरीके से एक अभियान के तहत चलाया गया। समाज और राज्य की मानसिकता पर उसका परिणाम भी भरपूर हुआ। यहाँ तक की राज्य ने इस विषय को स्वीकार किया और आगामी वर्ष में जाति आधारित जनगणना करने का प्रपत्र भी 16 जून 2025 को जारी किया है। परंतु ऐसा होते ही राष्ट्रीय प्रचार माध्यम और राजनीतिक वैचारिकी में इसका विषयांतर प्रारंभ हो गया। इस परिघटना में एक सुप्त षडयंत्र पल रहा है कि जैसे किसान कानून को मौन धारण करके शांत और किनारे कर दिया है, वैसे ही जाति जनगणना को भी चुपके से हेरफेर करके भुला दिया जाएगा। यह राज्य द्वारा एक आंतरिक षडयंत्र की आवाज हम तक पहुँच रही हैं। अत : हम उसका जायजा ले रहे हैं और समाज को अग्रिम जागृति का संदेश देना चाहते है। इस कार्य को राष्ट्रीय स्तर से अंजाम देने हेतु यह विषय यहाँ चर्चा के लिए रखा गया है।

संचालन	: मू. डॉ. मही पाल, (केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्य, बामसेफ)
प्रस्ताविक कथन	: मू. शर्मिष्ठा गौतम, (राष्ट्रीय संगठन सचिव, बामसेफ)
अतिथि वक्ता	: मू. डॉ. जितेन्द्र सिंगरौल (संचालक, पंचायत विभाग, रायपुर, छत्तीसगढ़)
	मू. डॉ. अरविंद कुमार, (सहायक प्राध्यापक, जे.एम.आई., नई दिल्ली)
	मू. अधि. रामेश्वर ठाकुर, (उच्च न्यायालय, जबलपुर, म.प्र.)
	मू. करुणानिधि जी (राष्ट्रीय महासचिव, ओबीसी कर्मचारी कल्याण संघ)

अध्यक्षता : मू. नितिन गनोरकर (केन्द्रीय कार्यकारिणी, बामसेफ)

समापन सत्र

दिनांक: 9 दिसंबर (मंगलवार), 2025
दिनांक: 9 दिसंबर (मंगलवार), 2025 समय : दोपहर 01.00 बजे से 02.00 बजे तक

विषय : कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणादाई संदेश और दिशानिर्देश

संचालन	: मू. इंजी. आर. एस. राम (राष्ट्रीय महासचिव, बामसेफ)
समापन भाषण	: संगठन के वरिष्ठ मार्गदर्शक

अध्यक्षता : मू. इंजी. आर.एल.ध्रुव (राष्ट्रीय अध्यक्ष, बामसेफ)

जय भीम ! जय मूलनिवासी !! जय भारत !!! जय संविधान !!!!